'कसप': एक प्रयोगशील उपन्यास

प्रस्तुत कर्ता- डॉ. नियाज़ ए. पठाण

आसिसटन्ट प्रोफेसर, हिन्दी,

एम. एन. कॉलेज, विसनगर ।

हिन्दी उपन्यास अपने उदभव काल से ही प्रगतिशील रहा है । स्वतंत्रता के बाद तो उसकी प्रगति की यह दौड़ और अधिक तेज़ दिखाई देती है । अपने युग के अंतहीन प्रश्नों को समाज के सामने रखने का दायित्व निभाते हुए वह अपने कला-रूप के प्रति भी सजग रहा है । सातवें-आठवें दशक तक आते आते तो वह काफी प्रौढ़ रूप धारण करता है और अपना एक चरित्र निश्चित कर लेता है । हिन्दी उपन्यास के इस निश्चित चरित्र को तोड़ते हुए आठवें दशक के अन्त में मनोहर श्याम जोशी इस परिदृश्य में प्रकट होते हैं । प्रेस, रेडियो, टी.वी., धारावाहिक, वृत्तचित्र, फिल्म, विज्ञापन आदि कई क्षेत्रों मे समान रूप से उत्कृष्ट लेखन करने वाले मनोहर श्याम जोशी लखनऊ विशवविद्यालय से 'कल का वैज्ञानिक' की उपाधि प्राप्त करने के बाद बेरोजगारी के अनुभव बटोरते हुए अंततः एक प्रयोगशील हिन्दी उपन्यासकार के रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं । नया कथा मुहावरा, किस्सागोई का विशिष्ट शिल्प-विधान और भाषागत कौशल लेकर आने वाले इस उपन्यासकार ने एक ओर हिन्दी उपन्यास की दशा को बदला है तो दूसरी ओर उसे आस्वादपरकता के ज़रिए लोकप्रिय भी बनाया है । 'कसप' उनका दूसरा महत्वपूर्ण प्रयोगशील उपन्यास है ।

प्रेम जैसे पारंपरिक विषय को नये अंदाज़ में प्रस्तुत करने के कारण 'कसप' अधिक चर्चित उपन्यास रहा है । मनोहर श्याम जोशी ने यह उपन्यास प्रेम-कहानियों की घनघोर पाठिका रहीं अपनी पत्नी के कहने पर लिखा है और उन्हीं को समर्पित भी किया है । एक प्रेम कथा होने के साथ-साथ यह उपन्यास कुमाऊँ लोक-जीवन एवं मध्यवर्गीय जीवन का जीवन्त दस्तावेज़ भी है । उपन्यास का आरंभ प्रेम के लिए आदर्श माने जाने वाले हिल स्टेशन नैनीताल के पहाड़ी परिवेश से होता है । नैनीताल में नायिका बेबी के मौसा और नायक देवीदत्त तिवारी उर्फ डी.डी. के दूर-दराज के चाचा ने अपनी बेटी के विवाह के निमित्त चार दिन के लिए एक डाक बंगला किराये पर ले रखा है । नायक-नायिका इसी विवाह प्रसंग में सम्मिलित होने आए हुए हैं । नायक पढ़ाई खत्म करने के बाद ए.जी. दफ्तर में क्लर्की के अनुभव बटोरता हुआ फिल्मी दुनिया में काम करने हेतु मुम्बई चला गया है । बिरादरी में वह हमेशा 'शिबौ शिबौ' (बेचारा) कहकर पुकारा जाता रहा है । जीवन में कभी प्रेम न पाने वाले नायक का परिचय लेखक इस तरह देते हैं -'नायक ने न केवल प्रेम नहीं किया है बल्कि अक्सर अश्रु-प्रवाह करते हुए यह तय पाया है कि मैं उन अभागों में से हूँ जिन्हें कभी प्यार नहीं मिलेगा । विधाता ने मुझे इस योग्य बनाया ही नहीं है कि कोई मुझसे प्यार करें । छह

फूट तीन इंच और एक सौ पैंतीस पौंड की इस सींकिया काया से कौन आकर्षित हो सकता है भला ? तिस पर निर्धन । विफल । अव्यवहार कुशल । सर्वथा-सर्वथा उपेक्षणीय ।'[1] नायिका मैत्रेयी शास्त्री उर्फ बेबी संस्कृत के प्राध्यापक पद से अवकाश प्राप्त करने वाले विष्णुदत्त शास्त्री की इकलौती अल्हड़, खिलन्दड़ बेटी है । चार भाइयों की बहन बेबी हमेशा अपने नाम को सार्थक करने में विश्वास रखती है । तो शादी के सिलसिले में नैनीताल आए नायक-नायिका की प्रथम मुलाकात बड़े ही बेढ़ब तरीके से होती है । 'यदि प्रथम साक्षात्कार की बेला में कथा नायक अस्थायी टट्टी में बैठा है तो मैं किसी भी साहित्यिक चमत्कार से उसे ताल पर तैरती हुई किसी नाव में बैठा नहीं सकता ।'[2] भारतीय साहित्य परंपरा में कुछ चीज़ों का वर्णन वर्जित माना गया है । इसीलिए हिन्दी कथा-संसार को भदेसपन से निहायत परहेज रहा है । पूर्व की रचनाओं में कहीं असंस्कार या कुसंस्कार आया है तो संस्कारिता के साथ । कहीं अश्लीलता की बात हुई है तो बड़े ही श्लील ढंग से । भदेस से परहेज हमें भीरू बनाता है ऐसा मानने वाले मनोहर श्याम जोशी कथा परंपरा की पारंपरिक मान्यता को तोड़ते हैं और नायक-नायिका की प्रथम भेंट अस्थायी टट्टी के सामने कराते हैं । पारंपरिक सुन्दर पक्ष की अपेक्षा भदेस को प्रतिष्ठित करना भी 'कसप' उपन्यास की प्रयोगशीलता है ।

डी.डी. में प्रेम को बसाने लायक सांसारिकता का अभाव है । प्रतिभा और मौलिकता होते हुए भी खुद को 'शिबौ शिबौ' पुकारा जाना उसे अच्छा लगता है । ऐसे डी.डी. की कल्पना की प्रेयसी जीन सिम्मंस (विदेश की एक प्रसिद्ध अभिनेत्री) के कुमाउँनी संस्करण बेबी से वह पहली ही नज़र में प्यार करने लगता है । जबकि बेबी के लिए डी.डी. प्रेम से अधिक खेल की वस्तु है । पहली मुलातात में अपने इजारबन्द की 'मारगाँठ' के दर्शन कराने वाले इस 'लाटे' को वह अपनी शरारतों का पार्टनर बना लेती है । सामाजिक हैसियत के मुताबिक डी.डी. बेबी से ब्याह करने का तो सपना भी नहीं देख सकता । अशिष्टता और छेड़छाड़ से शुरू हुई यह प्रेम कहानी बेबी के घर वालों को पसंद नहीं आती । अत: बेबी के भाई कर्नल शास्त्री उसे लेकर बरेली चले जाते हैं । अपने मन की मान डी.डी. भी बरेली जाता है । कर्नल शास्त्री उसके साहस को देखकर स्तब्ध रह जाते हैं । बेबी से मिलकर मुम्बई जाने के बाद डी.डी. शास्त्रियों की बेटी के लायक बनने की कोशिश करता है । वह मुम्बई से बेबी के नाम लम्बे लम्बे पत्र लिखता है । पांडित्य से परिपूर्ण पत्र पढ़कर बेबी से ज्यादा उसके पंडित पिता खुश होते हैं । पंडितजी अपनी बेटी के सामने उन पत्रों की व्याख्याएँ करते हैं , जो असल में बेबी के लिए उद्दीपन का कार्य करती हैं । डी.डी. पंडितजी की भानजी दया का विवाह मुम्बई में रहने वाले एक अच्छे घर में तय कराता है । इसलिए शास्त्री परिवार उसका एहसान मानते हुए उसे विवाह में आमंत्रित करता है । बेबी उस विवाह प्रसंग में डी.डी. की प्रतिक्षा करती है परन्तु 'प्रेम करने के लिए नहीं , बदमाशी करने के लिए । क्योंकि उसके लिए प्रेम दो अकेलेजनों के एक-दूसरे को सहजने, सहलाने और असीसने का पीडास्पद और पीड़ा ज़नित क्रम नहीं है । प्रेम उसके लिए दो जनों की स्वास्थ्यप्रद क्रीड़ा है ।'[3] इसी क्रीड़ा

का शास्त्री परिवार द्वारा विरोध होता है और उनका विरोध जितना उग्र होता है, बेबी उतनी ही तीव्रता से डी.डी के प्रति आकर्षित होती है । बेबी की सगाई कर दी जाती है । बेबी गणानाथ के मंदिर में डी.डी. को बुलवाती है और अन्ततः पकड़े जाने पर घोषणा करती है कि 'मैंने उस बगड़गौ के लाटे से कर ली है सादी । इनसे कह दो बाबू , आगे से उसे गाली न दें, उस पर हाथ न उठायें ।'[4] अब तक डी.डी. भी अपनी प्रतिभा के बलबूते पर फिल्म जगत की बड़ी हस्ती बन चुका है । यों 'कसप' में प्रेम की परंपरागत अभिव्यक्ति नहीं हुई है । मनोहर श्याम जोशी ने अपने खिलन्दडी अंदाज में प्रेम के एक नये रूप से परिचय कराया है । पुराने विषय के इसी नयेपन को रेखांकित करते हुए गोपालराय लिखते हैं- 'मनोहर श्याम जोशी का दूसरा उपन्यास 'कसप' मूलतः एक प्रेम कथा है, पर इसका रूप और अन्दाज इतना नया है कि सदियों का यह घिसापिटा विषय भी इस उपन्यास में नयी चमक से भर गया है ।'[5]

प्रेम कहानी यहाँ नया मोड़ लेती है । डी.डी. अब पढ़ाई करने अमरिका जाना चाहता है । उसे कभी 'शिबौ शिबौ' न देखना चाहने वाली बेबी उसे अपने पिता के घर घरजमाई बनाकर रखना चाहती है । डी.डी. को बेबी का यह प्रस्ताव स्वीकार्य नहीं होता । अतः बेबी उसी अन्दाज में अपने रिश्ते के टूट जाने की भी घोषणा करती है । 'बाबू, मैंने तुमसे एक दिन आकर कहा था मेरी शादी हो गई । आज मैं तुमसे कह रही उस शादी में ना मैं विधवा हो गई ।'[6] इस प्रकार 'कसप' में मनोहर श्याम जोशी ने प्रेम की उदात्तता को चित्रित करने वाली परंपरागत स्थितियों के बदले भदेस और अनैतिक जैसी लगने वाली सहज और यथार्थ स्थितियों के वर्णन में अधिक रूचि ली है । मर्यादा, नैतिकता और कृत्रिम आदर्शवादिता के आवरण बिना मनुष्य की सहज वृत्तियों के इस प्रस्तुतीकरण ने 'कसप' उपन्यास को हिन्दी उपन्यास की परंपरा में विशिष्टता प्रदान की है । वीरेन्द्र यादव ने लिखा है- ''कसप' की सफलता इस तथ्य में अन्तर्निहित है कि वह हिन्दी उपन्यास में प्रेम की स्वीकृत संरचना का विखंडन करता है । न तो यहाँ 'नदी के द्वीप' की रेखा एवं भुवन की उद्दाम प्रेम-गाथा है और न ही 'गुनाहों के देवता' के चन्दर व सुधा का प्लेटोनिक प्यार । अत्यंत सामान्य जीवन-स्थितियों एवं रोजमर्रापन में रचा-बसा यह प्रेम वितान पाठकीय आस्वाद के जिस चरमबिन्दु का संस्पर्श करता है, वही इसका साध्य है ।'[7]

विषय के साथ-साथ मनोहर श्याम जोशी की शिल्पगत बाजीगरी का अधिक निखरा हुआ रूप हमें 'कसप' उपन्यास में देखने मिलता है । कसप एक कुमाऊँ बोली का शब्द है । जिसका अर्थ है- क्या जाने ? इस उपन्यास का मुख्य विषय है क्या जाने ? के अन्दाज में प्रेम का निरूपण करना । अपने इस विषय को निरूपित करने के लिए जोशीजी ने अनेक रचना-रीतियों का कलात्मक विनियोग किया है । उपन्यास के आरंभ में ही उन्होंने हजारीप्रसाद द्विवेदी के अंदाज में रचनात्मक छद्म रचा है । 'किसी के रचे पर मैं जो रच रहा हूँ, यहाँ एडवर्डयुगीन बंगलों के इस शान्त सुन्दर पहाड़ी कस्बे विनसर में, वह एक प्रेम कहानी है । इस विचित्र शीर्षक की विशिष्ट अर्थवत्ता है उसमें । विचित्र ही है यहाँ सब

क्योंकि मूल कथा संस्कृत में लिखी बेढब-सी कादम्बरी है ।'[8] वस्तुतः कादम्बरी के रचयिता बाणभट्ट शाश्वत प्रेमी के प्रतीक हैं । अपनी प्रेम-कहानी को बाणभट्ट की रचना कादम्बरी से जोड़कर रखने का लेखक का कौशल 'कसप' उपन्यास के अभिनव शिल्प-विधान का परिचायक है ।

'कसप' की रचना-रीति का एक महत्वपूर्ण आयाम है उसमें लेखकीय हस्तक्षेप । सर्वज्ञ पद्धति अपनाने के बावजूद लेखक कथा में निरन्तर उपस्थित होकर कभी 'मैं' शैली में स्थितियों की व्याख्या करता है तो कभी उन पर व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ । उपन्यास पढ़ते हुए लगातार पाठक को लगता है कि लेखक चीज़ों को नकार रहा है परन्तु नकारते हुए उन्हें स्थापित करना उनका अनूठा अन्दाज है । 'नियति लिखती है हमारी पहली कविता और जीवनभर हम उसका ही संशोधन किये जाते हैं । और जिस बेला सदा के लिए बन्द करते हैं आँखें, उस बेला परिशोधित नहीं, वही अनगढ़ कविता नाच रही होती है हमारे स्नायुपथों पर ।..... नितान्त भावुक हैं, ये स्थापनाएँ, सर्वथा अग्राह्य हैं हमारे नागर, आधुनिक और परिष्कृत मानस को ।.... नायक की है यह कथा, ऐसा कहकर, नायक की तरह ही कन्धे उचका देने की अनुमति मैं आपसे चाहता हूँ ।'[9] लेखक ने इस नयी रचना-रीति के द्वारा रचना के साथ-साथ रचना की आलोचना भी करते जाने की अदभूत चालाकी का परिचय दिया है । लेखक की विशिष्टता इस बात में भी है कि उनकी ये आलोचनात्मक टिप्पणियाँ रचना का एक अभिन्न अंग बनकर कहीं भी पाठक को अखरती नहीं हैं । लेखक कथा-कथक के रूप में तृतीय पुरुष शैली अपनाता है तो अपनी आलोचनात्मक टिप्पणियों के लिए प्रथम पुरुष शैली का प्रयोग करता है तो कभी-कभी द्वितीय पुरुष शैली का प्रयोग करके अपने पात्रों से सीधा संवाद भी साधता है । यही वह शिल्पगत बाजीगरी है, जिसने 'कसप' उपन्यास को एक प्रयोगशील उपन्यास के रूप में स्थापित किया है ।

मनोहर श्याम जोशी व्यावसायिक रूप से फिल्मों और टेलिविज़न से जुड़े रहे हैं । इसलिए उन्होंने अपने फिल्मी अनुभवों का भी 'कसप' उपन्यास में सर्जनात्मक विनियोग किया है । यह सिनेमायी अन्दाज़ भी 'कसप' उपन्यास के शिल्प-विधान का एक महत्वपूर्ण प्रयोग माना जा सकता है । ''कसप' में विखंडन के शिल्प में विकसित होती हुई कथा है जो स्क्रीन प्ले और कैमरे की गतियों के आभास से कथ्य को निर्मित करती है ।'[10] लेखक के इस नये प्रयोग से उपन्यास में वर्णनात्मकता होते हुए भी दृश्यात्मकता का आभास होता है । इसकी एक-एक घटना दृश्य प्रतीत होती है और दृश्य पूरा होने पर 'शोर्ट फ्रीज' जैसे सिनेमायी शब्दों का प्रयोग भी मिलता है । 'परमात्मा की इस फिल्म की शूटींग में री-टेक नहीं होता । ....पच्चीस के पच्चीस दृश्य यहाँ दिखाना ज्यादती होगी । परमात्मा की फिल्म पर कैंची चलाने की धृष्टता कर केवल चार दृश्य दिखाने की अनुमति चाहता हूँ ।'[11] इस उपन्यास का नायक डी.डी. भी लेखक, फिल्मी लेखक और संभावनापूर्ण निर्देशक है । इसलिए लेखक द्वारा अपनायी गई इस पटकथा शैली उपन्यास के कथ्य के अनुरूप प्रतीत होती है ।

'कसप' उपन्यास की भाषा भी प्रयोगशील है । यह भाषा लेखक के भाषा पर के अधिकार को सिद्ध करती है । 'कसप' उपन्यास को एक पठनीय आस्वादमूलक कृति बनाने में इस प्रयोगशील भाषा का महत्वपूर्ण योगदान है । हिन्दी तेरे कितने रूप वाली इस भाषा के ज़रिए ही किस्सागोई के चरम उत्कर्ष तक पहुँचने में यह उपन्यास सफल रहा है । 'यह भाषा ही है जिसके कारण कालिदास से लेकर गुलशन नन्दा तक आजमाये गए प्रेम जैसे विषय को मनोहर श्याम जोशी मनुष्य के जीवन को भीतर-बाहर से ठीक-ठीक पहचानने वाली समर्थ कसौटी की तरह निर्मित कर पाये हैं ।'[12] 'कसप' में भाषा के कई कई रूप है । मोटे तौर पर हम इसे कुमाऊँनी जीवन का स्थानीय रूप, अंग्रेजी प्रभावित वैश्विक रूप, बनारसी जीवन का भोजपुरी रूप और सिनेमायी रूप में विभाजित कर सकते हैं । परन्तु यह भाषा सरलीकरण की इन सीमाओं को लांघते हुए आगे निकल जाने वाली भाषा सिद्ध हुई है । जिसने इस उपन्यास को संयम और ताजगी देकर कलाकृति के रूप में प्रतिष्ठित किया है । कुमाऊँनी जीवन से रंगी भाषा का एक रूप देखिए- 'जिन कक्काजी की सुधा-नाम्नी आयुष्यमती सौभाग्यकांक्षिणी का विवाह हो रहा है भीसूंण रानी की कोठी में उनसे डी.डी. का रिश्ता स्थानिक शब्दावली में लगड़ता-पगड़ता है अर्थात खीच-तानकर जोड़ा जा सकता है ।'[13] यह भाषा आंचलिक होते हुए भी उस पारंपरिक अर्थ में आंचलिक नहीं है, जिसका प्रयोग रेणु या राही मासुम रज़ा के उपन्यासों में हुआ है । इसकी विशिष्टता यह है कि इसमें कुमाऊँनी भाषा का प्रयोग किसी कथ्यगत राजनीतिक रणनीति के तहत नहीं हुआ है । 'कसप' उपन्यास में कुमाऊँनी भाषा के भी अनेक रूप हैं । अल्मोडा, नैनीताल, मल्लीताल और गंगोलीहाट में रहने वाले पात्रों की भाषा में ठेठ कुमाऊँपन देखने मिलता है तो शिक्षित पीढ़ी कुमाऊँ लहज़े में अंग्रेजी मिश्रित भाषा बोलती है । भाषा के इस रूप ने 'कसप' उपन्यास की भाषा को जीवंत, गतिशील और स्वाभाविक भी बनाया है तो शिष्ट हिन्दी और उसकी बोलियों की दूरी को भी मिटाया है । मनोहर श्याम जोशी इसी भाषा-तेवर के चलते मानक भाषा की सीमाओं को अपनी रचनात्मक प्रज्ञा से तोड़ते हैं । वागीश शुक्ल का यह कथन इसीलिए सही प्रतीत होता है- 'उपन्यास में बहुत कुछ अस्फुट है लेकिन कुछ भी कृत्रिम नहीं है और यह मानने पर बाध्य होना पड़ता है कि परत-दर-परत अर्थवत्ता और सामर्थ्य वाले शब्दों को कुतूहल और कौतुक से उछालते रहना जोशी का स्वभाव है और वे आपको अपने जादु से प्रभावित करना नहीं चाहते बल्कि यह चाहते हैं कि आप उसका मज़ा लें ।'[14]

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि विषय, शिल्प और भाषा की दृष्टि से मनोहर श्याम जोशी का 'कसप' उपन्यास प्रयोगशीलता का मानक माना जा सकता है । इसी प्रयोगशीलता के चलते प्रेम जैसा अति आजमाया गया विषय यहाँ एक नई ऊर्जा के साथ साकार हुआ है । जीवन के भदेसपन से उपजा 'कसप' उपन्यास का प्रेम शरारत और खिलवाड़ से पल्लवित होता है और अंतत: एक स्वास्थ्यप्रद क्रीड़ा के रूप में प्रतिष्ठित होता है । प्रेम की उदात्ता को त्यागकर भदेस जैसी लगने वाली स्थितियों का चित्रण इस उपन्यास को प्रयोगशील उपन्यास

बनाता है । प्रेम के इस नये रूप को अभिव्यक्त करने के लिए नया शिल्प-विधान तलाशा गया है । लेखकीय उपस्थिति से रचना के साथ रचना की आलोचना करते जाना और घटनाओं को सिनेमायी अंदाज में रखकर दृश्यों मे परिवर्तित करना इसी नये शिल्प-विधान के उपकरण हैं । इस उपन्यास की भाषा मात्र पढ़ी नहीं जाती, देखी और सुनी भी जा सकती है । इस प्रयोगशील भाषा ने अध्ययन की नयी दिशाएँ खोलने का कार्य किया है ।

संदर्भ-

1. मनोहर श्याम जोशी, कसप- पृ. 11
2. वही पृ. 15
3. वही पृ. 109
4. वही पृ. 215-216
5. गोपालराय, हिन्दी उपन्यास का इतिहास- पृ. 365
6. मनोहर श्याम जोशी, कसप- पृ. 259
7. नामवरसिंह (सं.) आधुनिक हिन्दी उपन्यास- पृ. 15
8. मनोहर श्याम जोशी, कसप- पृ. 9
9. वही पृ. 65
10. वी.के. अब्दुल अजीज (सं.) समकालीन हिन्दी उपन्यास समय और संवेदना- पृ. 17
11. मनोहर श्याम जोशी, कसप- पृ. 25
12. वी.के. अब्दुल अजीज (सं.) समकालीन हिन्दी उपन्यास समय और संवेदना- पृ. 17
13. मनोहर श्याम जोशी, कसप- पृ. 14
14. नामवरसिंह (सं.) आधुनिक हिन्दी उपन्यास- पृ. 87

****